संस्कृत शास्त्रों में पर्यावरणीय संतुलन का बोध

*डॉ. यशस्पति झा

सम्पूर्ण वैदिक वाङ्मय पर्यावरण चेतना का संवाहक रहा है। जब तक पृथ्वी वृक्षों और पहाड़ों से युक्त जंगलों से सम्पन्न रहेगी, तब तक वह मानव की सन्तानों का पालन-पोषण करती रहेगी। मनुष्य की आवश्यकताओं का सम्बन्ध पर्यावरण से ही है। वरणार्थक वृड् तथा वृञ् धातुओं से ल्युट् प्रत्यय के योग से निष्पन्न पर्यावरण पद का पर्यावरण का सीधा सम्बन्ध प्रकृति से ही है। वस्तुतः परि तथा आङ् उपसर्गपूर्वक 'परितः सम्यक् वृणोति आच्छादयति जगदिति पर्यावरणम्।' वेदो में अभिप्राय है पर्यावरण का संकेत 'वृतावृता' (अ0 वे0 12.1.52) छन्दांसि' (अ० वे0 18.1.17), 'आवृताः' (अ0 वे0 10.1.30), 'परिवृता' (अ0 वे0 10.8.31) 'पर्यभवत्' (अ0 वे) 10.2.18)। इन शब्दों से विदित होता है। पर्यावरण के अन्तर्गत भूमि, जल, वायु, अभि (ताप), आकाश, सभी जीव-जन्तु, पेड़-पौधे, वनस्पतियाँ एवं औषधियाँ सम्मिलित हैं।

पर्यावरण भौतिक तत्वों, शक्तियों का एक ऐसा समुच्चय है जो सृष्टि को जीवन्त बनाए हुए है। पर्यावरण का सामान्य अर्थ भौतिक परिवेश से है जिससे प्रभावित होता जैव जगत का जीवन स्पन्दित होता रहता है। प्राकृतिक नियम पर्यावरण को हमेशा जीवन्त बनाये रखते हैं। हमारे ऋषि मुनियों ने प्राकृतिक व्यवस्था को आत्मसात् करने का मार्ग अपनाया क्योंकि प्रकृति के साथ छेड़-छाड़ समस्त जीव मंडल के लिए खतरा बन सकता है। इसी कारण पर्यावरण के तत्वों पृथ्वी और धरती को माँ, पेड़ों को देवता, जीवो को ईश्वर का अंश, जल, वायु और मौसम को देवता माना गया। अथर्ववेद में मानव जीवन के लिए अनुकूल पर्यावरण की अभ्यर्थना करते हुए कहा गया है

विश्वस्वं मातरमोषधीनां ध्रुवां भूमिं पृथिवीं

धर्मणा घृताम् शिवां स्योनामनु चरेम विश्ववहा ।) अथर्ववेद, काण्ड

(17 अर्थात् जीवनदायी औषधियाँ देने वाली हे धरती माँ, हमें ऐसा पर्यावरण दीजिये जो हमारे जीवन के लिए हमेशा उपयुक्त हो।'संस्कृत शास्त्रों के पर्यावरण संतुलन विषयक विचार

हमारे ऋषि मुनियों ने प्राकृतिक सन्तुलन को बनाने के लिए प्रकृति के प्रत्येक अंग में शान्ति की महत्ता पर बल दिया है। भारतीय सांस्कृतिक परम्परा में प्रकृति की उपासना और सौन्दर्य साधना के स्वर मुखरित हुए हैं। वैदिक प्रार्थनाओं का

क्षेत्र कितना विस्तृत और विशाल है यजुर्वेद में प्रार्थना की गई है

ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्षं शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिर्वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिः ब्रह्म शान्तिः सर्व शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि।

"अर्थात् मेरे लिए द्युलोक, अन्तरिक्ष लोक और पृथिवी-लोक सुख शान्तिदायक हों, जल, औषधियां और वनस्पतियाँ शान्ति देने वाली हों, समस्त देवता, ब्रह्म और सब कुछ शान्तिप्रद हों। जो शान्ति विश्व में सर्वत्र फैली हुई है, वह मुझे प्राप्त हो। मैं बराबर शान्ति का अनुभव करूँ।'

(ऋग्वेद 10.186.1) में प्रार्थना की गई है यह वायु हमारे हृदयों के लिए कल्याणकारी और सुखकारी औषधि के रूप में होकर बहे और हमारे लिए दीर्घ आयु का सम्पादन करें। इसी प्रकार (यजु0 36/ 10) में प्रार्थना की गई है वायु सुखरूप होकर चले, सूर्य, सुखरूप होकर तपे, अत्यन्त गरजने वाले पर्जन्य देव भी हमारे लिए सुखरूप होकर अच्छी तरह बरसो, कैसी दिव्य प्रार्थनाएं हैं।

तैत्तरीयोपनिषद् के अनुसार 'ईश्वरीय आत्मा से आकाश की, आकाश से वायु की, वायु से अग्नि की और अग्नि से जल तथा जल से पृथ्वी की उत्पत्ति हुई। पृथ्वी ने वनस्पति उपजाई, अन्न दिया और मानव जाति सहित असंख्य जीव जन्तुओं को पैदा किया। इस सृष्टि में प्रत्येक जीव-जन्तु की अहम् भूमिका है।'

इस प्रकार सृष्टा, सृष्टि, प्रकृति और मानव एक ही अनुशासन से निष्पन्न होकर तथा एक ही अनुशासन से जुड़कर समन्वित हैं। हमारे पूर्वज प्रतिदिन के जीवन में प्रकृति माता की गोद में बच्चों की तरह खेलते हुए, परमात्मा के विभूति रूप सूर्य, वायु, उषा आदि देवताओं के साथ मानो वार्तालाप करते थे -

'एषा दिवो दुहिता प्रत्यदिर्शज्योतिर्वसाना समना पुरस्तात्।

ऋतुश्च पन्थामन्वेति साधुं प्रजानतीव न दिशो मिनाति) ऋग(3/124/1/'

हमारे ऋषियों ने पर्यावरण को सदैव महत्त्व दिया है। सभी सामाजिक, सांस्कृतिक परम्पराओं के में पर्यावरण की मूल को ही महत्त्व दिया गया है। प्राचीन समय में सुरक्षा एक ऐसा जीवन दर्शन विकसित हुआ जिसमें सूर्य, पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि, वनस्पति, सरिताएं, सरोवर आदि को भौतिक सम्पदा ही नहीं, अपितु जीवन के मूलाधार और देवतातुल्य मानकर पूजनीय माना गया।

वैदिक साहित्य में पर्यावरण संघटक तत्वों में द्यावापृथिवी जल, औषधियां, वायु, मेघ, नदी, वन, पर्वत, सूर्य, उषा और अग्नि परिगणित किया गया है। (क्रवेद 10.35.8, 64.8, 66.9, 10) अथर्ववेद में जल, वायु तथा औषधि इन तीन को

संघटक तत्त्व में शामिल करते हुए इन्हें 'छन्द' तथा 'पुरुरूप' कहा गया है। वैदिक में वृक्षों की भूमिका महत्त्वपूर्ण है। अग्निपुराण में वृक्षों की महिमा का उल्लेख है। पद्म ऋषियों ने वायु-शुद्धि पर कहा है-शं नो वातः पर्वताम् (य) वे0 36.10) वायु-शुद्धि पुराण में वृक्षारोपण नाम से पृथक अध्याय है। वटवृक्ष की पूजा का उल्लेख भी पद्य एवं मत्स्य पुराण में है - "महेश्वरो वटो भूत्वा तिष्ठते" शिव के रूप में इसकी पूजा की जाती है। धर्मशास्त्रों में वृक्षारोपण को परमपुण्य माना गया है। वृक्षों की महिमा का वर्णन करते हुए भगवान कृष्ण ने 'गीता' के दसवें अध्याय में कहा है कि वृक्षों में में पीपल का वृक्ष हूँ अतएव उसे 'देवसदनः' (देवताओं का निवास) अश्वत्थो सेवासदनः (अ० वे० (5.4.3) कहा गया है। उदुम्बर (गूलर) और अपामार्ग की महक जहाँ तक पहुँचती है। वहाँ रोग, भय और प्रदूषण नहीं रहता है- 'अपामार्ग, न तत्र भयमस्ति, यत्र प्राप्नोत्स्योषधे (अ0 वे0 4.19.2)' न तं यक्ष्मा अरुन्धतेयं भेषजस्य गुलगुलोः सुरभिर्गन्धोः अश्नुते (अ0 वे0 19.38.1) पीपल के वृक्ष में आक्सीजन के उत्सर्जन की क्षमता अधिक है इसलिए भारतीय हिन्दू धर्म में पीपल के वृक्ष को काटना प्रतिबन्धित माना गया है। ऋग्वेद में ऋषि ने कहा है

मा का कम्बीरमुह्यहो वनस्पतिर्न शस्तोर्विहिनीनशः। मोत सूरो अह एवा वन ग्रीवा आदघते वेः ।।'

अर्थात् - जिस प्रकार दुष्ट बाज पक्षी दूसरे पखेरूओं की गर्दन मरोड़कर उन्हें दुःख देता है और मार डालता है तुम वैसे न बनो और इन वृक्षों को दुख न दो, इनका उच्छेदन न करो। ये पशु-पक्षियों और जीव-जन्तुओं को शरण देते हैं।

मनु ने भी कहा है।

इन्धनार्थमशुष्काणां द्रुमाणामवपातनम्। आत्मार्थं च क्रियारम्भा निन्दितान्नादनं तथा ।।

ईंधन के लिये हरे वृक्षों को काटना और निन्दित अन्न को खाना उपपातक है।" ऋग्वेद वृक्षों को काटने का निषेध करता है एवं वृक्षों को लगाने हेतु निर्देश जारी करता है -

मा काकम्बीरम् उद्धृहो वनस्पतिम् । अशस्तीर्वि हि नीनशः।) ऋ. वे. (6.48.17

वनस्पतिंवन आस्थापयध्वम्, नि षृ दधिध्वम् अखनन्त उत्स

वैदिक साहित्य में पर्यावरण संघटक तत्वों में द्यावापृथिवी जल, औषधियां, वायु, मेघ, नदी, वन, पर्वत, सूर्य, उषा और अग्नि परिगणित किया गया है। (क्रवेद 10.35.8, 64.8, 66.9, 10) अथर्ववेद में जल, वायु तथा औषधि इन तीन को संघटक तत्त्व में शामिल करते हुए इन्हें 'छन्द' तथा 'पुरुरूप' कहा गया है। वैदिक में वृक्षों की भूमिका महत्त्वपूर्ण है। अग्निपुराण में वृक्षों की महिमा का उल्लेख है। पद्म ऋषियों ने वायु-शुद्धि पर कहा है-शं नो वातः पर्वताम् (य) वे0 36.10)

वायु-शुद्धि पुराण में वृक्षारोपण नाम से पृथक अध्याय है। वटवृक्ष की पूजा का उल्लेख भी पद्म एवं मत्स्य पुराण में है - "महेश्वरो वटो भूत्वा तिष्ठते" शिव के रूप में इसकी पूजा की जाती है। धर्मशास्त्रों में वृक्षारोपण को परमपुण्य माना गया है। वृक्षों की महिमा का वर्णन करते हुए भगवान कृष्ण ने 'गीता' के दसवें अध्याय में कहा है कि वृक्षों में में पीपल का वृक्ष हूँ अतएव उसे 'देवसदनः' (देवताओं का निवास) अश्वत्थो सेवासदनः (अ० वे० (5.4.3) कहा गया है। उदुम्बर (गूलर) और अपामार्ग की महक जहाँ तक पहुँचती है। वहाँ रोग, भय और प्रदूषण नहीं रहता है- 'अपामार्ग, न तत्र भयमस्ति, यत्र प्राप्नोत्स्योषधे (अ0 वे0 4.19.2)' न तं यक्ष्मा अरुन्धतेयं भेषजस्य गुलगुलोः सुरभिर्गन्धोः अश्नुते (अ0 वे0 19.38.1) पीपल के वृक्ष में आक्सीजन के उत्सर्जन की क्षमता अधिक है इसलिए भारतीय हिन्दू धर्म में पीपल के वृक्ष को काटना प्रतिबन्धित माना गया है। ऋग्वेद में ऋषि ने कहा है

मा का कम्बीरमुह्यहो वनस्पतिर्न शस्तोर्विहिनीनशः। मोत सूरो अह एवा वन ग्रीवा आदघते वेः ।।'

अर्थात् - जिस प्रकार दुष्ट बाज पक्षी दूसरे पखेरूओं की गर्दन मरोड़कर उन्हें दुःख देता है और मार डालता है तुम वैसे न बनो और इन वृक्षों को दुख न दो, इनका उच्छेदन न करो। ये पशु-पक्षियों और जीव-जन्तुओं को शरण देते हैं।
मनु ने भी कहा है।

इन्धनार्थमशुष्काणां द्रुमाणामवपातनम्।
आत्मार्थं च क्रियारम्भा निन्दितान्नादनं तथा ।।

ईंधन के लिये हरे वृक्षों को काटना और निन्दित अन्न को खाना उपपातक है।" ऋग्वेद वृक्षों को काटने का निषेध करता है एवं वृक्षों को लगाने हेतु निर्देश जारी करता है -

मा काकम्बीरम् उद्धृहो वनस्पतिम् । अशस्तीर्वि हि नीनशः।) ऋ. वे. (6.48.17
वनस्पतिंवन आस्थापयध्वम्, नि षृ दधिध्वम् अखनन्त उत्समा।
(ऋ.वे(10.101.11 .संस्कृतानुसन्धानपारिजातः

वैदिक साहित्य में पर्यावरण संघटक तत्वों में द्यावापृथिवी जल, औषधियां, वायु, मेघ, नदी, वन, पर्वत, सूर्य, उषा और अग्नि परिगणित किया गया है। (क्रवेद 10.35.8, 64.8, 66.9, 10) अथर्ववेद में जल, वायु तथा औषधि इन तीन को

संघटक तत्त्व में शामिल करते हुए इन्हें 'छन्द' तथा 'पुरुरूप' कहा गया है। वैदिक में वृक्षों की भूमिका महत्त्वपूर्ण है। अग्निपुराण में वृक्षों की महिमा का उल्लेख है। पद्म ऋषियों ने वायु-शुद्धि पर कहा है-शं नो वातः पर्वताम् (य) वे0 36.10) वायु-शुद्धि पुराण में वृक्षारोपण नाम से पृथक अध्याय है। वटवृक्ष की पूजा का उल्लेख भी पद्य एवं मत्स्य पुराण में है - "महेश्वरो वटो भूत्वा तिष्ठते" शिव के रूप में इसकी पूजा की जाती है। धर्मशास्त्रों में वृक्षारोपण को परमपुण्य माना गया है। वृक्षों की महिमा का वर्णन करते हुए भगवान कृष्ण ने 'गीता' के दसवें अध्याय में कहा है कि वृक्षों में में पीपल का वृक्ष हूँ अतएव उसे 'देवसदनः' (देवताओं का निवास) अश्वत्थो सेवासदनः (अ० वे० (5.4.3) कहा गया है। उदुम्बर (गूलर) और अपामार्ग की महक जहाँ तक पहुँचती है। वहाँ रोग, भय और प्रदूषण नहीं रहता है- 'अपामार्ग, न तत्र भयमस्ति, यत्र प्राप्नोत्स्योषधे (अ0 वे0 4.19.2)' न तं यक्ष्मा अरुन्धतेयं भेषजस्य गुलगुलोः सुरभिर्गन्धोः अश्नुते (अ0 वे0 19.38.1) पीपल के वृक्ष में आक्सीजन के उत्सर्जन की क्षमता अधिक है इसलिए भारतीय हिन्दू धर्म में पीपल के वृक्ष को काटना प्रतिबन्धित माना गया है। ऋग्वेद में ऋषि ने कहा है

मा का कम्बीरमुह्यहो वनस्पतिर्न शस्तोर्विहिनीनशः।

मोत सूरो अह एवा वन ग्रीवा आदघते वेः ।।'

अर्थात् - जिस प्रकार दुष्ट बाज पक्षी दूसरे पखेरूओं की गर्दन मरोड़कर उन्हें दुःख देता है और मार डालता है तुम वैसे न बनो और इन वृक्षों को दुख न दो, इनका उच्छेदन न करो। ये पशु-पक्षियों और जीव-जन्तुओं को शरण देते हैं।
मनु ने भी कहा है।

इन्धनार्थमशुष्काणां द्रुमाणामवपातनम्।

आत्मार्थं च क्रियारम्भा निन्दितान्नादनं तथा ।।

ईंधन के लिये हरे वृक्षों को काटना और निन्दित अन्न को खाना उपपातक है।" ऋग्वेद वृक्षों को काटने का निषेध करता है एवं वृक्षों को लगाने हेतु निर्देश जारी
करता है -

मा काकम्बीरम् उद्धृहो वनस्पतिम् ।

अशस्तीर्वि हि नीनशः।) ऋ. वे. (6.48.17

वनस्पतिंवन आस्थापयध्वम्, नि षृ दधिध्वम् अखनन्त उत्समा।

(ऋ.वे(10.101.11 .औषधियां वाय

अ० के० में प्रदूषण को करने उदुम्बर, अगि पास तथा अन पीपल का नाम आया है (अ० ० 5.43, 5.5, 6.10.2,3,8.7.20) पर्यावरण संघटकों में जल तत्व के लिए सर्वाधिक उहै। गीता में भवति पर्जन्य कहकर जल कीपर बल दिया गया है। यज्ञीय पति से जलन हो वह भी करने में बनकर वर्षा करता है। मेघा वर्षी(अं० ० 4.15.7) संवर्धन के साथ जल संरक्षण के उपाय भी म ओषधीहिंसी) (40 0 6.22) किसी भी स्थिति में जलन हानि न पहुंचायी जाय। नदियों में थूकना मल-मूत्र उत्सर्जित करना, कूड़ा का गन्दा पानी बहाना, जल के समीप शौच क्रिया करना इत्यादिस्मृतिय नीति ग्रन्थों में पूर्णतः वर्जित है।

भूमि-संरक्षण' पर्यावरण-संतुलन के लिए परम आवश्यक है। 'मनुस्मृति' में पर्यावरण शुचिता पर विशेष ध्यान देते हुए पृथ्वी को 'माता' संबोधित किया गया है। "भूमि सूक्तम् का एक भाग पृथ्वी माता को ही समर्पित है। भूमि संरक्षण पर्यावरण संतुलन के लिए परमावश्यक है। 'माता भूमि पुत्रोऽहं पृथिव्या (अ0 0 12.1.12). माना यजुर्वेद में 10.23, मंत्र में कहा गया है पृथिवी को किसी भी स्थिति में क्षति न पहुँचायी जाय - 'पृथिवी मातर्मा हिंसी: मो अहंत्वाम् पृथिवी के जिस भाग को खोदा आए, उसे फिर तत्काल पूरा कर दिया जाये।"

वेदों में कहा गया है कि पृथिवी को प्रदूषण से मुक्त रखा जाए अन्यथा समुद्र का जल स्तर बढ़ जाएगा और पृथिवी का विभिन्न भू-भाग जलमग्र हो जायेगा।

मा नो माता पृथिवी दुर्मती पात्) ऋ० वे05.43.15), मा त्वा समुद्र उदधीत् य० वे० 13.16)

ओजोन परत के सम्बन्ध में भी वेदों में चर्चा हुई है। वायुमंडल में ओजोन परत का निर्माण ऑक्सीजन के अणुओं से होता है। सूर्य के ताप से ऑक्सीजन के परमाणु विखंडित होकर ऑक्सीजन के अणुओं में मुक्त होते हैं और आपस में क्रिया करके ओजोन बनाते हैं लेकिन ओजोन कुछ अन्य क्रियाशील गैसों से संयोग कर नष्ट भी होती रहती है। इस प्रकार सूर्य के तीव्र प्रकाश में ओजोन का सतत् रूप से निर्माण एवं विनाश की प्रक्रिया चलती रहती है। ऋग्वेद में ओजोन परत के लिए 'महत् उल्ब' शब्द का प्रयोग मिलता है तथा इसे 'स्थिविर' अर्थात् स्थूल या मोटी परत कहा गया है।' 'उल्ब' अर्थात् ओजोन परत पृथिवी की रक्षा करती है। वर्तमान में वायुमण्डल में ओजोन के संतुलन को नष्ट करने में मानवीय हस्तक्षेप एक मुख्य कारण है।

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि हमारा वैदिकरण निशान्त, सुन्दर है।घटकों को अपने सामाजिक सांस्कृतिक के मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है जिसमें सामाजिक बनाने का प्रयास करना चाहिये। क्षेत्र तक सीमित नही है इसकी चपेट में भी है। हमें खतरे की घंटी सुनाई पड़ने लगी है। ऐसे में हमारे ऋषियों के उदात्त विचारों से अवगत कराना आवश्यक सभ्यता

तब तक ही जिन्दा रहती है जब तक कि वह अपने समय की चुनौतियों पर प्रत्युत्तर देती है

वस्तुतः आज के संदर्भ में पर्यावरणीय समस्यायें इसी प्रकार की चुनौतियाँ है इसलिए एक बार हमें पुनः गौरवशाली अतीत से जुड़ना होगा। वैदिक युगीन साहित्य में दिये गये समाधान आज के युग में भी उतने ही प्रभावशाली है जितने कि उस समय थे। इन ग्रंथों में हमारे सामाजिक संस्कारों में प्रकृति प्रदत्त पर्यावरण को सन्तुलित बनाये रखने में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है।

वेद पुराण एवं धर्मशास्त्रों में 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की अप्रतिम पर्यावरणीय बांकी झांकी का चित्र संजोया हुआ है जो कि भारतीय दार्शनिक चिन्तन का मूलमंत्र है

"सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।'

'सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद्दुःखभाग्भवेत्॥"

***व्याख्याता**
व्याकरण
राजकीय शास्त्री संस्कृत महाविद्यालय
अलवर (राज.)

सन्दर्भ

1. घरा एवं पर्यावरण नियोजन एवं समन्वय संगठन, मध्य प्रदेश, भोपाल, 1992
2. त्रीणी छन्दांसि कवयो वियेतिरे पुरूरूपं दर्शितं विश्वचक्षणम
3. आयो बात्ता ओषधयः तान्येकस्मिन् भुवन आर्पितानि।। (अ० वे. 18.1.17)
4. ऋग्वेद 06/48/17संस्कृत शास्त्रों के पर्यावरण संतुलन विषयक विचार 211
5. मनु, 11/64
6. महत तदुल्बं स्थविरं तदासीत् । 7.
7. नाप्सु मूत्रं पुरीषं वा ष्ठीवनं वा समुत्सृजेत् ।
8. अमेध्यलिप्तमन्द्रा लोहितं वा विषाणि वा । (मनुस्मृति, 4.56) येनाविष्टितः प्रविवेशिथायः । (ऋ0 10.51.1)
9. येनाविष्टितः प्रविवेशिथापः । ऋ0 10.51.1 तस्योत जायमानस्य उल्ब आसीद् हिरण्ययः । अ० वे0 4.2.8. (य0 वे0 25.21, ऋ० वे0 1.89.8)